विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष : 6 अंक : 21 मार्च, 2013

विश्व हिंदी दिवस 2013, मॉरीशस

बाएँ से श्री अजामिल माताबदल, श्री मीमांसक, प्रो. हर्मन वैन ऑल्फ़न, शिक्षा मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी, तथा श्रीमती पूनम जुनेजा

विश्व हिंदी सचिवालय, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्वावधान में मॉरीशस में विश्व हिंदी दिवस 2013 समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी, विशेष वक्ता प्रो. हर्मन वैन ऑल्फ़न तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे। पत्रिका में पढ़िए चीन, ऑस्ट्रिया, विएना, स्लोवेनिया आदि देशों में विश्व हिंदी दिवस 2013 समारोहों की रिपोर्ट।

शेष पृ. 2-4

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 'हिंदी का दूसरा समय' का विशाल आयोजन संपन्न

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 'हिंदी का दूसरा समय' (1-5 फ़रवरी 2013) का आयोजन किया गया जिसमें पहली बार न सिर्फ़ साहित्यकारों ने भाग लिया बल्कि साहित्य के इतर जनांदोलन, मीडिया, सिनेमा, रंगमंच, अनुवाद आदि विधाओं में काम कर रहे संस्कृतिकर्मियों ने बड़े पैमाने पर हिस्सेदारी कर कार्यक्रम को एक सफ़ल विमर्श में बदल दिया।

शेष पृ. 9

9-10 फ़रवरी, 2013 को आई.सी.सी.आर., प्रवासी दुनिया और अक्षरम के संयुक्त तत्वावधान में दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव संपन्न। शेष पृ. 8

सृजनगाथा व अभिव्यक्ति वेब पत्रिकाओं द्वारा 12 फ़रवरी 2013 से 19 फ़रवरी 2013 तक संयुक्त अरब अमिरात में 6ठा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन संपन्न। शेष पृ. 10

मॉरीशसीय हिंदी साहित्य : शताब्दी समारोह (1913-2013), एक दिवसीय सम्मेलन व सृजनात्मक लेखन कार्यशालाएँ संपन्न

'विश्व भाषा हिंदी सम्मान' से विभूषित हिंदी साहित्यकार एवं हिंदी विद्वान

शनिवार 2 मार्च, 2013 मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के लिए एक ऐतिहासिक दिन रहा। इस दिन को मॉरीशस के हिंदी साहित्य प्रकाशन के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में सचिवालय ने 2 मार्च, 2013 को मॉरीशसीय हिंदी साहित्य शताब्दी समारोह का आयोजन किया। मॉरीशस के इन्हीं सौ वर्षों के साहित्य पर अमिट छाप छोड़ने तथा अमूल्य योगदान देने वाले साहित्यकारों और संस्थाओं को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'विश्व भाषा सम्मान' दिया गया।

शेष पृ. 6-7

विश्व हिंदी सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ की पांचवीं वर्षगांठ

आधिकारिक कार्यारंभ दिवस में उपस्थित हिंदी विद्वान एवं गणमान्य अतिथि

11 फ़रवरी को विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने आधिकारिक कार्यारंभ की पांचवीं वर्षगाँठ मनाई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में भारत के प्रख्यात हिंदी विद्वान व भाषावैज्ञानिक प्रो. वी. आर. जगन्नाथन का व्याख्यान हुआ। साथ ही मॉरीशस के दो हिंदी विद्वानों डॉ. उदय नारायण गंगू तथा श्री रामदेव धुरन्धर के भी वक्तव्य रहे।

शेष पृ. 5

भारतीय उच्चायोग, लंदन में सम्मान समारोह संपन्न

इंग्लेंड में हिंदी के क्षेत्र में अपूर्व योगदान देने वाले हिंदी लेखकों, पत्रकारों, शिक्षकों और संस्थाओं को एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया।

शेष पृ. 10

विश्व हिंदी दिवस 2013

मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी

गुरुवार 10 जनवरी, 2013 को विश्व हिंदी सचिवालय, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्वावधान में मॉरीशस के फ़ेनिक्स स्थित इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में विश्व हिंदी दिवस 2013 समारोह का भव्य आयोजन किया गया ।

मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसन्त कुमार बनवारी मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर उपस्थित थे । मॉरीशस में हिंदी शिक्षण के इतिहास पर नज़र दौड़ाते हुए उन्होंने शिक्षण के क्षेत्र में उठाए जा रहे कदमों तथा संस्कृति-सभ्यता की रक्षा में भाषा के योगदान पर विचार व्यक्त किए । इसके साथ ही आधुनिकता के साथ चलने वाली हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति और शिक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यापार, मनोरंजन आदि क्षेत्रों में इसके फैलाव को रेखांकित किया । उन्होंने सचिवालय द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए यह आशा व्यक्त की कि विश्व हिंदी दिवस मनाने की जो परंपरा स्थापित हुई है वह और भी सुदृढ़ हो तथा ऐसी गतिविधियों से सचिवालय विश्व स्तर पर अपनी भूमिका निभाती रहे ।

कार्यक्रम में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव श्री मीमांसक जी ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री महामहिम डॉ. मनमोहन सिंह का संदेश पढ़ा । उन्होंने भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री टी. पी. सीताराम का संदेश भी पढ़ा और विश्व हिंदी दिवस पर सभी को शुभकामनाएँ दीं ।

परंपरा के अनुरूप विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सचिवालय द्वारा विदेश के एक हिंदी विद्वान को आमंत्रित किया जाता है । इस वर्ष सचिवालय के आमंत्रण पर अतिथि-वक्ता ऑस्टिन स्थित तैक्ज़स विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध हिंदी विद्वान प्रो. हर्मन वैन ऑल्फ़न मॉरीशस पधारे । अपने संदेश में उन्होंने कहा कि "हिंदी संसार में मॉरीशस की चर्चा अक्सर की जाती है । यहाँ विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हिंदी की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कदम है । हिंदी की प्रगति के लिए उत्साह और रुचि देखने को मिलती है जो साहित्य तथा भाषा के लिए आवश्यक है ।" फिर प्रो. ऑल्फ़न ने अमेरिका में हिंदी के इतिहास और वर्तमान स्थिति पर अपने विचार दिए । "पचास वर्ष पूर्व अमेरिका में हिंदी पढ़ाई जाने लगी । जैसे-जैसे प्रवासी भारतीय यहाँ आने लगे, उनकी भाषा, संस्कृति तथा खानपान भी हमारे और करीब आए। हिंदी शिक्षा को छात्र-केंद्रित किया गया ताकि वे बेहतर तरीके से सीख सकें । फिर लेंग्वेज फ़्लैग्शिप कार्यक्रम आरंभ हुआ । 2006 में हिंदी-उर्दू फ़्लैग्शिप तैक्ज़स विश्वविद्यालय में शुरू हुई जिसके फलस्वरूप हिंदी सीखने वालों को बहुत लाभ हुआ । । छात्रों को विश्व

श्रीमती पूनम जुनेजा

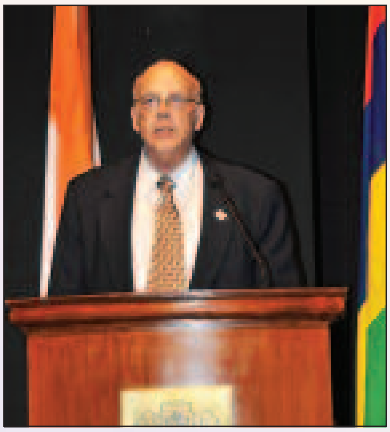

ऑस्टिन स्थित तैक्ज़स विश्वविद्यालय के हिंदी विद्वान प्रो. हर्मन वैन ऑल्फ़न

नागरिक बनाने के उद्देश्य से ही यह कार्यक्रम चला ।" उन्होंने हिंदी पढ़ाने वाले स्वयंसेवी संस्थाओं और हिंदी-प्रेमियों की भूमिका पर भी बात की ।

इनसे पूर्व विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने स्वागत भाषण में उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए सचिवालय द्वारा गत वर्ष आयोजित कार्यक्रमों की सफ़लता का ब्यौरा देते हुए इसी तरह अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी प्रेमियों के लिए बेहतर मंच प्रदान करने की बात की । मॉरीशस के हिंदी संस्थाओं, हिंदी विद्वानों तथा हिंदी प्रेमियों के प्रति उन्होंने आभार व्यक्त किया और सभी को अपनी उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया ।

लोकार्पण एवं पुरस्कार

इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय डॉ. वसन्त कुमार बनवारी द्वारा

श्री विजय कुमार बिहारी के द्विभाषी शब्दकोश का लोकार्पण

सचिवालय की वार्षिक पत्रिका विश्व हिंदी पत्रिका के चौथे अंक (प्रकाशित तथा इलेक्ट्रॉनिक संस्करण) का लोकार्पण किया गया । इसके साथ ही सचिवालय के वेबसाइट पर 'हर दिवस हिंदी दिवस' पृष्ठ का लोकार्पण भी किया गया जिसमें दैनिक रूप से हिंदी विद्वानों एवं साहित्यकारों पर आधारित सूचनाएँ उपलब्ध करायी जाएगी ।

मॉरीशस में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में सक्रीय तथा कई पाठ्य पुस्तकों के रचयिता श्री विजय कुमार बिहारी जी द्वारा संकलित एक हिंदी-फ्रेंच

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कहानी प्रतियोगिता के मॉरीशसीय विजेता

चित्रपट और हिंदी के कलाकार सहित शिक्षा मंत्री तथा अन्य अतिथि ।

शब्दकोश का भी इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा लोकार्पण किया गया । इसके प्रकाशन में विश्व हिंदी सचिवालय एवं मॉरीशस स्थित फ़्रेंच संस्थान का सहयोग प्राप्त हुआ ।

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कहानी प्रतियोगिता के मॉरीशसीय विजेताओं (प्रथम पुरस्कार – सुश्री भावना होरिशरण, सांत्वाना पुरस्कार – श्री फ़ारूख़ रजल एवं श्री कुमारदत्त गुदारी) को भी पुरस्कृत किया गया । प्रतियोगिता के अन्य विजेता हैं : श्री विवेक श्रीवास्तव, श्री अखिलेश शुक्ल, श्री दिलबाग विर्क, श्री ओम प्रकाश तिवारी, श्रीमती अंकिता जैन, डॉ. मंजु पाण्डेय, श्री मृत्युंजय प्रभाकर तथा श्री राजेश सहाय ।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकार

सांस्कृतिक कार्यक्रम

हर वर्ष की तरह इस बार भी बहुत ही सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जो इस वर्ष हिंदी सिनेमा की शताब्दी को समर्पित रहा । उपमहासचिव गंगाधरसिंह सुखलाल द्वारा निर्मित 'चित्रपट और हिंदी की' प्रस्तुति में चलचित्र के माध्यम से हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार-प्रसार में और भाषा की गतिशीलता में हिंदी सिनेमा के योगदान को उभारा गया । इस प्रस्तुति में हिंदी सिनेमा का प्रारंभ, भाषागत विशेषताएँ, छोटे परदे पर चलचित्र का आगमन आदि को उभारा गया । हिंदी सिनेमा को देश विदेश में उचित स्थान देकर हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करने वाले महान कलाकारों को यह एक श्रद्धांजलि भी थी ।

महात्मा गांधी संस्थान के कलाकार

महात्मा गांधी संस्थान एवं इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से हिंदी सिनेमा के सौ वर्षों को दर्शाने में अपनी भागीदारी दी जिसे उपस्थित दर्शकों ने बहुत पसन्द किया ।

सचिवालय के उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने मंच-संचालन का कार्य संभाला ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस

चीन

विश्व हिंदी दिवस के मौके पर चीन में भी हिंदी की गूंज रही । विदेशों में रहने वाले भारतीयों के लिए अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी से जुरने का यह एक अच्छा अवसर होता है । 10 जनवरी को यही बात पेइचिंग स्थित भारतीय दूतावास में भी देखने को मिली । चीनी लोगों की उपस्थिति इस बात का प्रतीक है कि हिंदी व भारत के प्रति उनका लगाव गहरा है ।

10 जनवरी को पेकिंग विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफ़ेसर अनिल राय ने हिंदी में मंच की कमान संभाली । प्रो. राय ने कहा कि हिंदी को वैश्विक रूप देने के लिए विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है । उन्होंने इसे दुनिया की सबसे अहम वैज्ञानिक भाषा का दर्जा भी दिया । साथ

ही हिंग्लिश के प्रचलन से हिंदी को खतरे जैसी बात को नकारते हुए कहा कि हिंदी यूं ही आगे बढ़ती जाएगी । अरबी, फ़ारसी, तुर्की व अंग्रेज़ी सहित तमाम क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द हिंदी में आसानी से मिल जाते हैं । इस दौरान सांस्कृतिक काउंसलर अरुण साहू ने भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का संदेश भी पढ़ा जिसमें हिंदी प्रेमियों को बधाई देते हुए कहा गया कि यह हिंदी के लिए एक ऐतिहासिक दिन है ।

अनिल आज़ाद पाण्डेय की रिपोर्ट

तमिलनाडू हिंदी अकादमी

तमिलनाडू हिंदी अकादमी एवं धर्ममूर्ति बहादुर कलवल कणन चेट्टि हिंदू कॉलेज, चेन्नई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित विश्व हिंदी दिवस एवं अकादमी के वर्षोत्सव का भव्य समारोह 10 जनवरी 2013, सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ । उपस्थित मुख्य अतिथि श्री सुनील चोपड़ा, केंद्रीय हिंदी समिति के सदस्य, प्रख्यात तेलुगू-हिंदी साहित्यकार तथा तमिलनाडू हिंदी अकादेमी के अध्यक्ष श्री रेड्डी ने अपने विचार व्यक्त किए । यहाँ पर निष्ठा के साथ कार्यरत हिंदी सेवियों को उनके सकारात्मक एवं सार्थक प्रयास के लिए शुभकामनाएँ दी गईं ।

आजीवन हिंदी सेवा सम्मान की शिरोमणि विभूतियाँ डॉ. एन. सुंदरम्, डॉ. एम. शेषण, डॉ. आर. शौरिराजन, डॉ. पी. के. बालसुब्रमण्यम, डॉ. एस. सुब्रमणियन का सम्मान हुआ । अन्य राज्यों से हिंदी विद्वान डॉ. कुसुम गीता, डॉ. जे. रामचंद्रन नायर, श्रीमती देवी नागरानी, डॉ. पी. वी. जगमोहन का भी सम्मान हुआ । हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास के योगदान के लिए डॉ. निर्मला एस. मौर्य, डॉ. ए. भवानी, श्री प्रह्लाद श्रीमली, श्री वी. आर. सुरेश, डॉ. जयशंकर बाबू, डॉ. एस. बशीर तथा श्रीमती के. वी. यमुना को साहित्य सम्मान प्रदान किया गया ।

इस आयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसमें देवी नागरानी का ग़ज़ल प्रस्तुतिकरण, स्वर्ण वर्षा गुरूमूर्ति का एकल भरतनाट्यम, पी.जान विल्लियम टीम का मूक नाटक प्रस्तुतिकरण तथा एस.एम. विनोदिनी, अनिता, भावना का एकल गायन संपन्न हुआ । इसके बाद देवी नागरानी के नेतृत्व में आयोजित कवि-गोष्ठी में प्रह्लाद श्रीमाली, अनिल अवस्थी, सुमन अग्रवाल, आदि ने भाग लिया । समारोह का समापन सुमन अग्रवाल के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ ।

देवी नागरानी की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस

विएना

11 जनवरी 2013 को ऑस्ट्रिया की राजधानी विएना में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया । इस अवसर पर विएना विश्वविद्यालय के आधुनिक दक्षिण एशियाई विभाग में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया । विभाग के प्राध्यापक की परिकल्पना और हिंदी के विद्यार्थियों की सक्रियता के फलस्वरूप प्रस्तुत इस कार्यक्रम को 'जीवन और स्त्री कल्पना' नाम दिया गया था ।

कार्यक्रम का आरंभ मंगलाचरण नृत्य से हुआ । इसके बाद विद्यार्थियों ने हिंदी फ़िल्मों के कुछ गाने प्रस्तुत किए । कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण जगदीश चन्द्र माथुर द्वारा लिखित एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का मंचन था । बी.ए. के पाँचवे सिमेस्टर में ''मैरिज एण्ड डिवोर्स इन हिंदी लिट्रेचर एण्ड सिनेमा'' शीर्षक पर 2012-13 के शीतकालीन सत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने कक्षा में इस एकांकी का हिंदी से जर्मन में अनुवाद तैयार किया और मंचन भी किया । यह अनुवाद कार्यक्रम में दर्शकों को भी उपलब्ध कराया गया था । कार्यक्रम में नेपाली कक्षा के विद्यार्थियों ने भी थारू समुदाय की एक नेपाली लड़की की कहानी पर आधारित जर्मन किताब 'सक्लवेन किंड'' (बाल श्रमिक) का संक्षिप्त नेपाली अनुवाद प्रस्तुत किया । विद्यार्थियों द्वारा कार्यक्रम का उद्घोषण भी हिंदी और जर्मन भाषाओं में किया गया । कार्यक्रम में विभाग के प्रोफ़ेसर मार्टिन गेन्जले ने स्वागत मन्तव्य और अध्यापिका अलका आत्रेय चूडाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया । कार्यक्रम में दर्शकों की आशातीत सहभागिता थी ।

अलका आत्रेय चूडाल

कुवैत

10 जनवरी 2013 को कुवैत के भारतीय दूतावास में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया । कुवैत चैपटर ऑफ़ सी.बी.एस.ई. स्कूल्स की श्रीमती अंजु धेमन तथा श्री एच. के. मोहन ने इस आयोजन को संभव बनाया जिसमें 9 स्कूलों से आए छात्रों ने भाग लिया । दीप-प्रज्ज्वलन के पश्चात छात्रों ने अपने हिंदी प्रेम को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया । मुख्य अतिथि श्री विधु नायर ने भारत के प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा और अपने भाषण में हिंदी सीखने की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं स्कूलों को भी पुरस्कृत किया ।

www.indiansinkuwait.com से साभार

श्रीलंका

कोलम्बो स्थित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में 10 जनवरी 2013 को विश्व हिंदी के उपलक्ष्य में एक सुंदर सांस्कृतिक आयोजन तथा 'श्रीलंका में हिंदी का प्रभाव' विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि के रूप में उप उच्चायुक्त श्री पी. कुमारन उपस्थि थे । केलानिया विश्वविद्यालय के प्रो. इंद्रा दसनायके एवं प्रो. लक्ष्मण सेनेवीरथना तथा श्री जायेवर्देनेपुरा विश्वविद्यालय के नीलंथी राजापक्षे ने 'श्रीलंका में हिंदी का प्रभाव' विषय पर प्रस्तुति की ।

प्रो. इंद्रा दसनायके ने 1975 में नागपुर में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में अपने अनुभवों को साझा किया और हिंदी शिक्षण की आवश्यकता के साथ ही संस्कृति पर आधारित पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराने, और साहित्यिक रचनाओं के हिंदी से सिंहली में अनुवाद कराने पर बल दिया । प्रो. लक्ष्मण सेनेवीरथना ने भाषाविज्ञान के आधार पर श्रीलंका में हिंदी सिखाने के तरीकों को उजागर किया । उन्होंने हिंदी बोलते वक्त किए जाने वाली व्याकरणिक गलतियों को सामने रखा और मानक हिंदी को ही सर्वश्रेष्ठ माना । नीलंथी राजापक्षे ने भारत और श्रीलंका के सांस्कृतिक रिश्ते और हिंदी शिक्षण विकास पर प्रस्तुति की ।

उप उच्चायुक्त पी.कुमारन ने बताया कि बहुत जल्द भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में एक भाषा प्रयोगशाला की स्थापना होगी ताकि हिंदी भाषा और उच्चारण में विद्यार्थी निपुणता प्राप्त कर सकें। इस अवसर पर संस्था के छात्रों ने हिंदी गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किए । प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया ।

sundayobserver.lk से साभार

भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2013

प्रत्येक वर्ष की तरह भारत के विदेश मंत्रालय ने 10 जनवरी 2013 को विश्व हिंदी दिवस मनाया । इस अवसर पर विदेश सेवा संस्थान में एक समारोह आयोजित किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री अजय चौधरी, (विदेश सेवा संस्थान) थे । आमंत्रित अतिथियों में मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य, 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन से संबंधित संचालन तथा उप समिति के सदस्य, हिंदी विद्वान, हिंदी प्रेमी तथा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे, जिन्होंने उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढ़ाई ।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुनीति शर्मा, उप सचिव (हिंदी) ने किया । स्वागत भाषण श्री अशोक तोमर, विशेष सचिव द्वारा दिया गया और प्रत्येक वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर प्रधान मंत्री जी का संदेश श्री अनूप कुमार मुद्गल, संयुक्त सचिव द्वारा पढ़ा गया।

विदेश मंत्रालय द्वारा जे.एन.यू., केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ रहे विदेशी छात्रों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था । हिंदी निबंध प्रतियोगिता के 21 विजेताओं को मुख्य अतिथि डीन श्री अजय चौधरी ने नकद पुरस्कार व उपहार भेंट किए ।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से विभिन्न देशों जैसे - फिजी, श्रीलंका, चीन, पोलैण्ड, तुर्कमेनिस्तान, त्रिनिडाड एवं टोबैगो, म्यांमार, स्लोवाकिया आदि के हिंदी सीख रहे छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभागार में मौजूद अतिथियों का मन मोह लिया । कार्यक्रम के अंत में कुछ विदेशी छात्रों ने अपने विचार वयक्त किए । उन्होंने हिंदी सीखने का अवसर प्रदान करने के लिए भारत सरकार का अत्यंत आभार व्यक्त करते हुए इच्छा व्यक्त की कि वे अपने-अपने देश लौटकर हिंदी का अध्यापन तथा हिंदी का प्रचार-प्रसार करेंगे ।

साभार : प्रवासी दुनिया

स्लोवेनिया

स्लोवेनिया स्थित ल्युब्ल्याना विश्वविद्यालय में 10 जनवरी 2013 को विश्व हिंदी दिवस तथा हिंदी के पुराने छात्रों का जुटाव संपन्न हुआ । यह कार्यक्रम भारतीय दूतावास तथा विश्वविद्यालय के एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज़ विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ । उच्चायुक्त जयाकर जेरोम ने इस आयोजन में अपने विचार व्यक्त किए । उन्होंने बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों के समक्ष इस बात पर बल दिया कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था में वह उदारता है जिससे हिंदी के साथ अन्य प्रादेशिक भाषाएँ भी फल-फूल रही हैं । एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुआ जिसमें हिंदी गीत प्रस्तुत किए गये ।

indianembassy.si से साभार

बहरीन

बहरीन के इंडियन स्कूल में 10 जनवरी 2013 को विश्व हिंदी दिवस 2013 का आयोजन हुआ । इस अवसर पर आलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रो. अब्दुल अलीम मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे । इस अवसर पर सुबह कई प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं जैसे कविता-वाचन, निबंध, अंत्याक्षरी आदि । प्रो. अलीम ने राज भाषा हिंदी की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि यह केवल भारत तक ही सीमित नहीं, बल्कि एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन चुकी है । उन्होंने यह भी कहा कि अब समय आ गया है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाएँ।

इस अवसर पर प्रो. फ़र्ज़ाना अलीम ने समाज और देश के विकास के लिए शिक्षा और भाषा के महत्व पर बल दिया तथा स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता को उजागर किया । इस अवसर पर भारतीय दूतावास के श्री गौरव गांधी सहित भारत के संसदीय सदस्य डॉ. मुनाज़ीर हासन और जम्मु-कश्मीर के पूर्व मंत्री श्री गुलचैन सिंह चरक उपस्थित थे । भारतीय कलाकार आई.एच. सिद्दीक और रोशन एह्तिशम सिद्दीक ने अपने हास्य प्रस्तुती से सभी का मनोरंजन किया । इस अवसर पर हिंदी शिक्षक श्री ओ.पी. सिंह, श्रीमती ऊषा राजकुमार तथा हिंदी प्रेमी उपस्थित थे ।

indianschool.bh/

विश्व हिंदी सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ की पांचवीं वर्षगांठ

व्याख्यान देते हुए प्रो. वी.आर. जगन्नाथन

विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने आधिकारिक कार्यारंभ की पांचवीं वर्षगाँठ 11 फ़रवरी, 2013 को डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, पाय के सभागार में मनाई । इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम के रूप में भारत से आमंत्रित प्रख्यात हिंदी विद्वान व भाषावैज्ञानिक प्रो. वी. आर. जगन्नाथन तथा मॉरीशस के दो हिंदी विद्वानों डॉ. उदय नारायण गंगू व श्री रामदेव धुरन्धर के वक्तव्य हुए ।

इस अवसर पर विशेष रूप से भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी. सीताराम ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई । साथ ही शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय के प्रधान सहायक सचिव, श्री मेधा गणपत, आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान, श्री हरिदेव रामधनी तथा डॉ. हंसा गणेसी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने सभागार में उपस्थित गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। विशेष अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ । इस अवसर श्रीमती ललिता गोपी ने सरस्वती वन्दना गायन किया । उनकी प्रस्तुति ने सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

समारोह के अतिथि वक्ता प्रो. वी.आर. जगन्नाथन ने 'वैश्विक संदर्भ में हिंदी' विषय पर व्याख्यान देते हुए हिंदी भाषा के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को उभारा । प्रो. जगन्नाथन ने बताया कि राष्ट्रभाषा और विश्व भाषा कोई पदवी नहीं है । यह तो भाषा के लिए एक ऐसी भूमिका है, जो भावना तथा अस्मिता पर आधारित है । उन्होंने भाषा को सामासिक संस्कृति (Composite Culture) का माध्यम बनाने की बात की । उन्होंने यह भी जोड़ा कि सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति की क्षमता के आधार पर अंग्रेज़ी भाषा ने विपुल सामग्री इकट्ठा करके विश्व भाषा का दर्जा हासिल किया । उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जो कार्य अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं में हो सकते हैं, यदि वे हिंदी में भी किए जाएँ तो हिंदी से जुड़ाव अधिक होगा तथा यह विज्ञान, अर्थ, सामाजिक विज्ञान आदि क्षेत्रों में संबल बनेगी ।

प्रो. जगन्नाथन ने कहा कि मेहनत करके लक्ष्य को प्राप्त करना ही सर्वमान्य है । हिंदी भाषा के लिए भी यही करना उचित है । इसे प्रमुखता देते हेतु हमें कारण तैयार करनी चाहिए । उन्होंने किसी भी क्षेत्र में रचे जा रहे साहित्य को बढ़ावा देने के लिए पेपर तैयार करने पर बल दिया गया ताकि उन प्रांत का साहित्य अधिक हिंदी-प्रेमियों तक पहुँच पाए और वे उस देश-विशेष के साथ-साथ उसकी संस्कृति को अपनी भाषा में समझ सकें। इसमें अपनी अस्मिता, अभिव्यक्ति और शैली होगी । प्रो. जगन्नाथन ने हिंदी के ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करने पर भी बल दिया जो अन्य देशों में भी भेजे जा सकें । उनके अनुसार इस कार्य में विभिन्न देशों में उपस्थित भारतीय उच्चायोग सांस्कृतिक दूत का कार्य कर सकते हैं ।

उनसे पूर्व महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि ''मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लक्ष्य से हुई है। भारत और मॉरीशस सरकार के संयुक्त तत्वावधान में स्थापित सचिवालय ने अपना औपचारिक कार्य 11 फ़रवरी 2008 को आरंभ किया था और तब से लेकर अब तक अपने विज़न और मिशन तथा उद्देश्यों के अनुरूप सचिवालय कई कार्यक्रम, संगोष्ठियाँ, सम्मेलन तथा हिंदी के उन्नयन से संबंधित गतिविधियाँ आयोजित कर चुकी हैं।''

समारोह के दो अन्य विशिष्ट वक्ताओं ने भी अत्यंत ज्ञानवद्धक वक्तव्य दिये ।

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध लेखक श्री रामदेव धुरन्धर ने मॉरीशस में हिंदी साहित्य पर बात की । उन्होंने बहुत ही सारगर्भित रूप में हिंदी साहित्य के बीजारोपण, उसके प्रभाव, विकास, विभिन्न विधाओं में लेखकों का झुकाव, विषय वस्तु का चयन, उद्देश्य तथा अन्य मुख्य बिंदुओं पर बात की जिससे उपस्थित हिंदी विद्यार्थि लाभान्वित हुए । उन्होंने नई पीढ़ी को साहित्य से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया ।

उनके पश्चात डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के शैक्षिक अध्यक्ष डॉ. उदय नारायण गंगू ने मॉरीशस में हिंदी शिक्षण के इतिहास से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर बात की । बैठकाओं में हिंदी शिक्षा से होते हुए प्राथमिक, माध्यमिक, सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाओं एवं स्वयं-सेवियों की हिंदी शिक्षा संबंधी सेवाओं पर उन्होंने विस्तार से अपने अमूल्य विचार सभी के साथ साझा किये ।

समारोह में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव श्री मीमांसक; इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक सुश्री अमिता शॉ; आर्य सभा के मंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम; हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति; महात्मा गांधी संस्थान के प्राध्यापक गण; वासुदेव विष्णुदयाल कॉलेज से श्री रामनाथ जीता; स्थानीय हिंदी साहित्यकार आदि उपस्थित थे ।

इस वर्ष भी सचिवालय का आधिकारिक कार्यारंभ दिवस वक्ताओं की विद्वता तथा वक्तव्य के विषयों की विविधता व मौलिकता के कारण विशेष आकर्षण का केंद्र रहा । कई हिंदी विद्वानों, हिंदी छात्रों तथा हिंदी प्रेमियों ने वक्तव्य को सुनने में अपनी रुचि दिखाई । डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के छात्रों व प्राध्यापकों के साथ- साथ महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग के छात्र व प्राध्यापक भी समारोह में उपस्थित हुए थे ।

प्रो. वी.आर जगन्नाथन की मॉरीशस यात्रा का पूरा लाभ उठाते हुए सचिवालय ने 12 फ़रवरी को महात्मा गांधी संस्थान के भाषा संसाधन केन्द्र के सौजन्य से संस्थान के सभी भारतीय भाषाओं के प्राध्यापकों के लिए 'भारतीय भाषा शिक्षण नई प्रणालियाँ' विषय पर व्याख्यान करवाया । इसके अतिरिक्त 15 फ़रवरी को हिंदी, तमिल विभाग तथा भाषा संसाधन केन्द्र के सौजन्य से साहित्य के छात्रों के मध्य प्रो. जगन्नाथन के शोध विषय अर्थात तमिल कवि पेरियालवार और हिंदी कवि सूरदास के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर अत्यंत रोचक व्याख्यान का आयोजन किया । प्रो. जगन्नाथन ने अपनी यात्रा के अंतर्गत मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम कैलाश प्रयाग तथा शिक्षा और मानव संसाधन मंत्री माननीय वसंत कुमार बनवारी के साथ भी भेंट की जिनके अंतर्गत हिंदी भाषा, संस्कृति और शिक्षण से सम्बन्धित कई विषयों पर गम्भीर चर्चा हुई ।

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी. सीताराम द्वारा प्रो.जगन्नाथन को स्मृति चिह्न

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

मॉरीशसीय हिंदी साहित्य : शताब्दी समारोह (1913-2013)

संदेश देते हुए डॉ. वसंत कुमार बनवारी

हिंदी भाषा के वैश्विक प्रसार में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा भारत के गिरमिटिया मज़दूरों का भारतीय भूमि से हज़ारों मील दूर देशों में प्रवास का ऐतिहासिक योगदान रहा है । इन आप्रवासियों द्वारा रचा गया साहित्य ही भारतेत्तर (आप्रवासी) हिंदी साहित्य की नींव है । इस भारतेत्तर हिंदी साहित्य में रचनाओं व रचनाकारों की संख्या, सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन में साहित्य का योगदान व कलात्मक स्तर की दृष्टि से मॉरीशस का हिंदी साहित्य नि:संदेह अग्रदूत की भूमिका निभाता रहा है ।

इस भूमिका की शताब्दी के विशेष अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय ने 2 मार्च 2012 से मॉरीशसीय हिंदी साहित्य शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में गतिविधियों की एक कड़ी का आरंभ एक उद्घाटन समारोह व एक दिवसीय सम्मेलन से किया ।

शनिवार 2 मार्च, 2013 मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के लिए एक ऐतिहासिक दिन रहा । इसी तिथि को सौ वर्ष पूर्व 1913 में मणिलाल डॉक्टर द्वारा प्रकाशित 'हिंदुस्तानी' पत्र में 'गणेशी' की कविता और निबन्ध 'होली' छपे थे जिन्हें मॉरीशसीय हिंदी साहित्य की उपलब्ध प्रथम प्रकाशित कृतियाँ मानी जाती है । यह ऐतिहासिक प्रकाशन विश्व स्तर पर हिंदी साहित्य में मील का पत्थर है ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में से एक, 101 वर्षीय बृजलाल धनपत को सम्मान

महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यं भारती सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह में मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसन्त कुमार बनवारी उपस्थित हुए । साथ ही सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक बिजय मधु, निदेशिका डॉ वी. कुंजल, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल उपस्थित थे। इस बृहद आयोजन के लिए विश्व हिंदी सचिवालय को मॉरीशस में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाओं का भी महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ । इन संस्थाओं के प्रधान व अनेक सदस्य भी समारोह में उपस्थित थे ।

मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने अपने भाषण में कहा – ''आज ऐसा लग रहा है कि मैं मॉरीशस में हिंदी भाषा के इतिहास का साक्षी बन रहा हूँ । मॉरीशस का हिंदी साहित्य, इस देश के पूरे सौ साल के इतिहास में देश की जनता के साथ-साथ चला है । देश के सभी आन्दोलन में भाग लिया है और मॉरीशस को इतना सुंदर राष्ट्र बनाने में पूरा सहयोग दिया है । स्वतंत्रता के समय में लोगों को जगाने के लिए... स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए... अधिकारों को पाने के लिए... मॉरीशस के हिंदी साहित्य ने अपनी भूमिका निभाई । देश को जब स्वतंत्रता मिल गई तो इसी भाषा और साहित्य ने हम सभी को एक होकर, भाईचारे के साथ देश को आगे बढ़ाने का संदेश दिया । मुझे इस बात की खुशी है कि आज सचिवालय हमारे देश के साहित्य का शताब्दी समारोह मना रहा है ।''

समारोह का सबसे महत्वपूर्ण और भावात्मक क्षण था सम्मान समारोह । मॉरीशस के सौ वर्षों के साहित्य में अमिट छाप छोड़ने तथा अमूल्य योगदान देने वाले साहित्यकारों और संस्थाओं को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई । मंत्री डॉ. वसंत बनवारी द्वारा यह 'विश्व भाषा सम्मान' मॉरीशस के उन ऐतिहासिक रचनाकारों, संस्थाओं तथा कर्मठ हिंदी सेवियों को प्रदान किया गया जिन्होंने इस देश में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार-कार्य में जुड़कर अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिख दिया ।

श्री अभिमन्यु अनत को सम्मान

मॉरीशस के हिंदी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान के लिए स्व. डॉ. ब्रजेन्द्र कुमार भगर 'मधुकर' स्व. श्री सोमदत्त बखोरी, स्व. डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि, श्री अभिमन्यु अनत, श्री रामदेव धुरंधर, सुश्री भानुमति नागदान, श्री इन्द्रदेव भोला 'इन्द्रनाथ', श्री प्रह्लाद रामशरण को विश्व भाषा सम्मान सम्मान प्रदान किया गया । हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में जुड़ी दो ऐतिहासिक संस्थाओं को भी विश्व भाषा सम्मान दिया गया । प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में एक 101 वर्षीय बृजलाल धनपत ने भी संस्था की ओर से विश्व भाषा सम्मान ग्रहण किया । आर्य सभा मॉरीशस को भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए सम्मानित किया गया । मॉरीसस के सरकारी हिंदी शिक्षकों के योगदान के लिए सरकारी अध्यापकों की प्रथम टोली में नियुक्त श्री लक्ष्मीप्रसाद मंगरू को प्रतिनिधि रूप में सम्मानित किया गया ।

कार्यक्रम के आरंभ में सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि ''मणिलाल डॉक्टर की हिंदुस्तानी पत्र में छपी पहली मॉरीशसीय हिंदी रचनाएँ ऐतिहासिक हैं जिन्हें भारत से बाहर के हिंदी साहित्य का मार्गदर्शक माना जा सकता है । 'प्रवासी साहित्य' नाम ही यहाँ के साहित्य को लेकर ही सार्थक हुआ ।'' उनके शब्दों में ''ये मॉरीशस के हिंदी साहित्यकार और संस्थाएँ ही हैं जिन्होंने कठिन ऐतिहासिक स्थिति में हिंदी को भारत भूमि से मीलों दूर जीवित रखा । आज भले ही दुनिया भर में हिंदी बोलनेवाले भारतीय आप्रवासी लाखों करोड़ों की संख्या में हैं... परंतु मॉरीशस के साहित्यकारों और हिंदी सेवियों ने जिस प्रकार गरीबी, भूख, अपमान, डर, सबको जीतकर हिंदी की रक्षा की है... उसकी दूसरी मिसाल कम है ।''

श्री प्रह्लाद रामशरण

महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग के वरिष्ठ व्याख्याता तथा अध्यक्ष, भाषा संसाधन केंद्र श्री विनय गुदारी ने इस अवसर पर मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के इतिहास पर एक पावर पॉइंट प्रस्तुति की जिसमें 1913 से लेकर अब तक मॉरीशस में रचे साहित्य पर क्रमिक रूप से जानकारी दी गई।

अंत में मंच संचालिका सुश्री श्रद्धांजलि ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

सम्मेलन

उद्‌घाटन समारोह के बाद मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के इतिहास और भविष्य पर विचार करने हेतु देश के प्रमुख हिंदी विद्वान एक दिवसीय सम्मेलन के लिए एकत्र हुए । सम्मेलन तीन सत्रों में विभाजित था – मॉरीशसीय हिंदी पद्य, मॉरीशसीय हिंदी गद्य तथा मॉरीशसीय हिंदी पत्रकारिता व अन्य विधाएँ । सत्रों की अध्यक्षता क्रमश: श्री अजामिल माताबदल, श्री रामदेव धुरन्धर और श्री प्रह्लाद रामशरण ने किया ।

प्राथमिक, माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए सृजनात्मक लेखन कार्यशाला

प्रथम सत्र में मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के इतिहास पर खोज विषय पर श्री प्रह्लाद रामशरण की, ऐतिहासिक 'दुर्गा' हस्तलिखित पत्रिका पर श्री धनराज शंभु की, भगत 'मधुकर' के काव्य में भाषा और छंद' विषय पर डॉ. लालदेव अंचराज की और 'स्वातंत्र्योत्तर मॉरीशसीय कविता: अंत:संघर्ष एवं मुक्ति का आह्वान' विषय पर डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा की प्रस्तुति रही ।

द्वितीय सत्र में श्री कुमारदत्त गुदारी ने 'मॉरीशस का उपन्यास साहित्य : स्थानीय रचनाधर्मिता के प्रवृत्तिमूलक आयाम' विषय पर प्रस्तुति की । उसके बाद 'सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मॉरीशस की स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में यथार्थ-बोध : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण' पर श्रीमती संध्या देवी अंचराज़ नवोसा ने अपने विचार व्यक्त किये । डॉ. राजरानी गोबिन ने 'मॉरीशसीय हिंदी साहित्य का अनुवाद : प्रक्रिया एवं समस्याएँ' विषय पर प्रस्तुति की ।

अंतिम सत्र में मॉरीशस के नेशनल लाइब्रेरी की श्रीमती देवी सहदेव तथा श्री साङगारेन चेंगाना ने राष्ट्रीय पुस्तकालय में उपलब्ध मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक ग्रंथों व अन्य सामग्री की सूची प्रस्तुत करते हुए वहाँ की सुविधाओं पर भी सूचना प्रदान की । 'मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास' विषय पर श्री धरमवीर गंगू ने अपने विचार प्रस्तुत किये । डॉ. अलका धनपत ने 'मॉरीशसीय निबन्ध साहित्य' पर अधिक प्रकाश डाला । अंतिम प्रस्तुति डॉ. (श्रीमती) माधुरी रामधारी की रही जिनका विषय था 'मॉरीशसीय हिंदी नाट्य साहित्य : सामान्य प्रवृत्तियाँ एवं असुरक्षा-भाव' ।

श्री धनराज शंभु

तीनों सत्रों के अंत में प्रश्न सत्र रखे गए थे जिनमें भाग लेने वाले हिंदी प्रेमियों व छात्रों ने सक्रीयता दिखाई । धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही समारोह संपन्न हुआ ।

कार्यशालाएँ – दूसरी पीढ़ी के सआहित्यकारों की तैयारी

मॉरीशसीय हिंदी साहित्य शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य पर आयोजित गतिविधियों में संलग्न विश्व हिंदी सचिवालय व सहयोगी संस्थाएँ इस बात से भली भाँति अवगत हैं कि शताब्दी समारोह का अर्थ केवल इतिहास दर्शन न होकर भावी शताब्दी के साहित्य या विचार विमर्श तथा नई पीढ़ी के साहित्यकारों की तैयारी व उनके लिए उपयुक्त मंच की पहचान भी अनिवार्य होती है । इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सचिवालय ने कार्यारंभ करते हुए देश के प्राथमिक, माध्यमिक व विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों के लिए सृजनात्मक लेखन कार्यशालाओं का आयोजन भी किया । 23 फ़रवरी को हिंदी प्रचारिणी सभा में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए तथा 6 मार्च को महात्मा गांधी संस्थान में विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों के लिए कविता व लघुकथा लेखन कार्यशाला चलाई । संचालन देश के अग्रणि साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर, श्री सूर्यदेव सिबोरथ तथा श्री राज हीरामन ने किया ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव

गनमान्य अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन

9-10 फ़रवरी, 2013 को आई.सी.सी.आर., प्रवासी दुनिया और अक्षरम के संयुक्त तत्वावधान में दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव संपन्न हुआ । अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव का यह 11वां संस्करण है ।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव – 9 फ़रवरी, 2013

9 फ़रवरी को उत्सव का उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद के महानिदेशक श्री सुरेश गोयल ने किया । उद्घाटन सत्र में हिंदी के समक्ष उपस्थित चुनौतियों पर गंभीर चर्चा हुई । इस उत्सव के आयोजन का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार कर उसे व्यापकता प्रदान करना व उसकी रक्षा करना है ।

प्रथम सत्र

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में वक्ताओं ने हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति को उजागर करते हुए उसके प्रचार-प्रसार की संभावनाओं, हिंदी का अध्ययन-अध्यापन, हिंदी का विकास, हिंदी भाषा के मानक मूल्यांकन के लिए प्रस्तावित योजनाओं, हिंदी भाषा का संरक्षण, उसकी भाषावैज्ञानिक महत्व, विभिन्न देशों में हिंदी शिक्षण क्षेत्र में शिक्षकों के अनुभव, समस्याएँ व समाधान आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला । इस सत्र में मुख्य वक्ता श्री प्रभाकर श्रोत्रिय, डॉ.श्रीनारायण समीर, प्रो.हिदेआकि इशिदा, प्रो.अशोक चक्रधर, श्री राहुल देव, सुदर्शना प्रियदर्शनी, श्रीमती सुलेखा चोपला, डॉ.विमलेश कांति वर्मा रहे ।

कार्यक्रम में सान्निध्य ब्रिटेन से पधारे यू.के. हिंदी समिति के पदाधिकारी श्री के.बी.एल. सक्सेना का था । कार्यक्रम के प्रारंभ में अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलनों के सूत्रधार लल्लन प्रसाद व्यास की श्रद्धांजलि स्वरूप डॉ.सत्येन्द्र श्रीवास्तव का पत्र पढ़ा गया । कार्यक्रम का कुशल संचालन अक्षरम के अध्यक्ष अनिल जोशी द्वारा किया गया । इस सत्र में विशेष उपस्थिति हिंदी के प्रमुख प्रकाशकों हिंद पाकेट बुक्स, राजकमल प्रकाशन के अशोक महेश्वरी, वाणी प्रकाशन के अरुण महेश्वरी, डायमंड बुक्स के नरेन्द्र वर्मा की रही ।

द्वितीय सत्र

कार्यक्रम का दूसरा प्रमुख सत्र हिंदी प्रौद्योगिकी पर आधारित था । सत्र का संचालन प्रो.राजेश कुमार व अध्यक्षता प्रो.अशोक चक्रधर ने किया । प्रमुख वक्ता प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ श्री बालेंदु दधीच, सी-डैक के ग्रुप कोर्डिनेटर श्री जसजीत सिंह, श्री चन्द्र मोहन रावल तथा मनु इंफ़्रोसौलूशंस के सीईओ भारत भूषण रहे । इस सत्र में ई-बुक्स के स्वरूप और संभावनाओं, हिंदी प्रौद्योगिकी के उपकरणों, अनुवाद के क्षेत्र में उपलब्ध कंप्यूटर सहायक उपकरणों, ब्लॉग प्रकाशन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया ।

लेखक से संवाद

11 वें अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव में लेखक से संवाद श्रृंखला के अंतर्गत ज्ञानपीठ का 47वां सम्मान प्राप्त करने वाली वरिष्ठ उड़िया लेखिका पद्मश्री श्रीमती प्रतिभा राय से एक अंतरंग मुलाकात की गई जो कि इस उत्सव की विशेष उपलब्धि रही ।

नाट्य प्रस्तुति

इसके पश्चात राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक रामजी बाली के निर्देशन में नाटक विवेकानंद की प्रस्तुति की गई ।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव – 10 फ़रवरी, 2013

दूसरे दिन 10 फ़रवरी को प्रथम सत्र का संचालन डॉ.हरजेन्द्र चौधरी ने तथा अध्यक्षता वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो.केशरीलाल वर्मा ने किया ।

डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिंह ने 'रामकथा: कला संदर्भ ' विषय पर तथा नार्वे से आए अमित जोशी ने नार्वे में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डाला ।

म.प्र. पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य और वैज्ञानिक प्रो.एस.पी.गौतम, विदेश मंत्रालय में उप सचिव (हिंदी) सुनीति शर्मा, कनाडा की स्नेह ठाकुर, मैनचेस्टर, ब्रिटेन से आए डॉ.अंजनी कुमार, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय (मेरठ) के हिंदी भाषा के विभागाध्यक्ष श्री नवीन चन्द्र लोहानी, वरिष्ठ पत्रकार श्री अजीत राय, जापान के प्रो.हिदेआकि इशिदा आदि गणमान्य अतिथियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए ।

इस अवसर पर प्रदर्शनी हाल में Traces of Indian Culture in Vietnam विषय पर लगी प्रदर्शनी के संयोजक गीतेश शर्मा का परिचय कराया गया जिन्होंने वियतनाम, कंबोडिया, लाओस जैसे देशों में भारतीय संस्कृति के तत्वों की खोज पर विशेष बल दिया ।

रचनात्मक प्रस्तुतियाँ

इस सत्र में नाट्य प्रस्तुति, भजन प्रस्तुति, नाट्य पाठ, कहानी प्रस्तुति, एकल नाट्य अभिनय प्रस्तुति की गई । सत्र का संचालन डॉ.राजेश कुमार ने किया ।

सम्मान समारोह

रचनात्मक प्रस्तुतियों के बाद सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.रत्नाकर पांडेय उपस्थित थे।

सम्मान कार्यक्रम में 9 विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित किया गया । इनमें से श्री टी.एन.चतुर्वेदी को अक्षरम् शिखर सम्मान, रूस के डॉ.दिमित्रि चैलिशेव को संस्कृति समन्वय सम्मान, जापान के प्रो.हिदेआकि इशिदा को साहित्य सम्मान, डॉ.अंजनी कुमार को हिंदी सेवा सम्मान, श्रीमती कुसुम व्यास को संस्कृति सम्मान तथा डॉ.बलदेव वंशी को साहित्य सम्मान, श्रीमती सुनीति शर्मा को विश्व हिंदी सम्मेलन के सफ़ल संयोजन व संचालन के लिए हिंदी सेवा सम्मान, नई धारा के संपादक डॉ.शिवनारायण को साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित किया गया ।

कवि सम्मेलन

इस बार का कवि सम्मेलन गोपाल सिंह नेपाली की जन्मशती के अवसर पर उन्हें समर्पित किया गया था । कार्यक्रम में कवि मदनलाल मधु, वेदप्रकाश, सरोजनी प्रीतम, ममता किरण, शशिकांत, सुरेश नीरव, नरेश शांडिल्य, प्रवीण शुक्ल, शिवराज वत्स, स्नेह ठाकुर आदि ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की । बालस्वरूप राही ने इस कवि सम्मेलन की अध्यक्षता की ।

अंत में अनिल जोशी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही यह आयोजन सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ ।

प्रवासी दुनिया से साभार

प्रधान सपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति नहुला , श्रीमती विजया सरजु
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 676 1196
Fax (230) 676 1224
E-mail : info@vishwahindi.com
Website : www.vishwahindi.com
Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul - Pailles
Tel: 208 1317

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 'हिंदी का दूसरा समय' का विशाल आयोजन संपन्न

प्रो. नामवर सिंह द्वारा उद्घाटन

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में हिंदी के प्रख्यात कथाकार और नवनियुक्त कुलपति विभूति नारायण राय ने साढ़े चार साल पहले जनवरी 2009 में हिंदी भाषी समाज को विश्वविद्यालय से जोड़ने के लिए एक छोटे से परिसर में 'हिंदी समय' का पांच दिवसीय विशाल आयोजन कर नई बहसों को जन्म दिया था । पुन: चार वर्ष के अंतराल के बाद 'हिंदी का दूसरा समय' (1-5 फ़रवरी 2013) का यह आयोजन इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसमें पहली बार न सिर्फ़ साहित्यकारों ने भाग लिया बल्कि साहित्य के इतर जनांदोलन, मीडिया, सिनेमा, रंगमंच, अनुवाद आदि विधाओं में काम कर रहे संस्कृतिकर्मियों ने बड़े पैमाने पर हिस्सेदारी कर कार्यक्रम को एक सफ़ल विमर्श में बदल दिया ।

श्री विभूति नारायण राय

शीर्ष आलोचक एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो.नामवर सिंह ने हिंदी के साहित्यिक महाकुंभ का उद्घाटन किया । हज़ारी प्रसाद द्विवेदी सभागार में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए प्रो.निर्मला जैन ने कहा कि हिंदी की अवधारणा केवल साहित्य के रूप में नहीं है बल्कि हिंदी को सबकी भाषा बनना है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस आयोजन के माध्यम से हम अपनी परंपरा, इतिहास, ताकत, कमज़ोरियों और भविष्य की चुनौतियों पर बात करेंगे । विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में कहा कि यह तेज़ बदलाव का समय है । सूचना-संचार की विराटता के इस युग में हिंदी का प्रवेश बहुत तेज़ी से बढ़ाता जा रहा है । 'हिंदी का दूसरा समय' के संयोजक राकेश मिश्र ने आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला ।

'हिंदी का दूसरा समय' का पहला दिन हिंदी कथा साहित्य, हिंदी कविता, हिंदी आलोचना और गद्य के नाम रहा । रवींद्र कालिया ने अध्यक्षीय टिप्पणी करते हुए साहित्य की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला । प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि समालोचक को खुद अपनी आलोचना भी करने की प्रवृति विकसित करनी होगी । प्रो. के.एम. मालती ने स्त्री विमर्श पर प्रकाश डाला । 'दलित अभिव्यक्ति' सत्र में 'मुर्दहिया' आत्मकथा के लेखक तुलसीराम ने बताया कि अभिव्यक्ति की आज़ादी का सवाल हमारे सामने बड़ी चुनौती के रूप में उभर रहा है । 'आदिवासियों का सवाल' सत्र में लेखिका रमणिका गुप्ता ने विस्थापन, ज़मीन, पलायन आदि समस्याओं को उभारा और यह बताया कि किस प्रकार आदिवासी, किसान, मज़दूर भाषा को ज़िन्दा रखता है ।

तीसरे दिन मीडिया के विभिन्न माध्यमों यथा - 'हिंदी प्रिंट पत्रकारिता', 'इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता', 'ब्लॉग-इंटरनेट' और 'वैकल्पिक पत्रकारिता' पर खासी बहस हुई जिसमेंअरुण कुमार त्रिपाठी, विकास मिश्र, सी.के.नायुडू आदि वरिष्ठ पत्रकार व संपादकों ने गंभीर रूप से अपने अनुभव व विचार बाँटे । सत्र के संचालक डॉ.कृपाशंकर चौबे रहे ।

चौथे दिन नाटकों और सिनेमा को समर्पित था । 'हिंदी का मुख्यधारा सिनेमा' सत्र की अध्यक्षता कर रहे मोहन आगाशे ने कहा कि पहले लोग फ़िल्में समाज के लिए बनाते थे, आज पैसों के लिए बनाते हैं । प्रो.सुरेश शर्मा ने सत्र का संचालन करते हुए विस्तार से विषय पर प्रकाश डाला । धीरेंद्र अस्थाना ने बताया कि 'जो रचेगा, वही बचेगा', यह बात कहानी पर ही नहीं बल्कि सिनेमा पर भी लागू होता है । इस प्रकार हिंदी सिनेमा पर अजित राय, प्रह्लाद अग्रवाल, कमलेश पांडेय आदि ने अपने विचार व्यक्त किए । इसी दिन सिनेमा पर 'प्रतिरोध का सिनेमा' विषय पर एक सत्र में बहस हुई, जिसमें शाहआलम, किशोर वासवानी और झरना जावेरी ने अपने विचार व्यक्त किए । सत्र का संचालन अमरेंद्र कुमार शर्मा ने किया ।

अंतिम दिन 'हिंदी में अनुवाद' विषय पर आयोजित चर्चा के दौरान प्रो.जी.गोपीनाथ ने बताया कि एशिया में सबसे पहले अनुवाद एवं निर्वचन जैसा महत्वपूर्ण विषय इसी विश्वविद्यालय में शुरू किया गया और यह भी बताया कि अनुवाद को मुख्यधारा से जोड़ने की आवश्यकता है ताकि साहित्य का भी विकास हो सके । सुधीर सक्सेना ने अनुवाद की भूमिका और उसकी सार्थकता पर प्रकाश डाला ।

इसके पश्चात अजय तिवारी की अध्यक्षता में 'हिंदी में इतिहास और समाजशास्त्र' विषय पर ज़ोरदार बहस हुई । उन्होंने बताया कि साहित्य का मतलब केवल कहानी या कविता नहीं है, बल्कि सारा हिंदी वाङ्मय है । प्रोफ़ेसर अरुणेश नीरन शुक्ल के संचालन में हुई बहस में जितेंद्र गुप्ता, मनोज मिश्र, रविकांत, प्रेम सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए । फ़िर एक अन्य सत्र 'हिंदी में तकनीकी और वैज्ञानिक लेखन' विषय पर चर्चा हुई जिसमें वक्ताओं का मानना था कि स्वप्न और चिंतन की भाषा हिंदी बने ।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि रघु ठाकुर ने कहा कि आज मूल्यों का संकट, शिक्षा का बाज़ारीकरण और पैसे का बोलबाला है । आज के समय में हमें कबीर से सीख लेनी चाहिए । अध्यक्षता कर रहे प्रो.ए.अरविंदाक्षन के कहा कि इन पाँच दिनों में आए विद्वानों के बीच से बहुत सार्थक विचार आए । इस बृहद आयोजन में देश भर के साहित्यकारों ने शिरकत कर इसे सफ़ल बनाया । संयोजक राकेश मिश्र ने बताया कि यह आयोजन, जैसा कि अपने नाम से ही स्पष्ट है, हिंदी में यह दूसरी परंपरा और इसके विस्तार से संबंधित है । उन्होंने उपस्थित अतिथियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, आंदोलनकारियों और राजनीतिक चिंतकों के प्रति आभार व्यक्त किया । 'हिंदी का दूसरा समय' में भाग लेने के लिए भारत से करीब 169 लोग पहुँचे ।

बी.एस.मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी का नैसर्गिक विकास : गोष्ठी

तमिलनाडु के सुदूर जनपद पुदुक्कोट्टई स्थित डी राजाज़ कॉलेज के हिंदी विभाग में मुख्यत: तमिलभाषी छात्र-छात्राओं के लिए 'हिंदी का नैसर्गिक विकास' विषय पर राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के प्रधान सचिव आर. राजवेल ने कहा कि अनुवाद पर आश्रित होने और अंग्रेज़ी की भरमार हो जाने के कारण हिंदी के नैसर्गिक विकास में बाधा उत्पन्न हुई है तथा एक ऐसी अटपटी भाषा सामने आने लगी है जो संप्रेषण में असमर्थ है और हिंदी की प्रकृति के विपरीत है इसलिए महात्मा गांधी द्वारा सुझाया गया हिंदुस्तानी वाला रास्ता ही हिंदी के सहज और नैसर्गिक विकास का रास्ता है ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. सी. वडीवेलु ने की और डॉ. एम. राजेन्द्रन, प्रो. एम. चिन्नैया, प्रो.एस. विश्वनाथन तथा जी. सेल्वराजन अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए । सभी अतिथियों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हिंदी भाषा का ज्ञान देश-विदेश में विचारों के आदान-प्रदान के लिए अत्यंत आवश्यक है तथा इसके बिना विद्यार्थी के कूप-मंडूक बन जाने का खतरा है ।

कार्यशाला के विविध सत्रों में उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, हैदराबाद के अध्यक्ष प्रो. ऋषभ देव शर्मा ने 'हिंदी की प्रकृति : उच्चारण एवं वर्तनी का संदर्भ', पोंडिचेरी विश्वविद्यालय के डॉ. सी. जय शंकर बाबु ने 'कंप्यूटर की भाषा के रूप में हिंदी का विकास', मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के डॉ. एम. वी. सुब्बुरामन ने 'बोलचाल की हिंदी : एक दृष्टि' तथा संयोजक कैप्टेन डॉ. पोन राजरत्नम ने 'व्यक्तित्व विकास में भाषा का योगदान' विषय पर प्रतिभागियों को संबोधित किया और उन्हें सहज सरल हिंदी के प्रयोग के लिए प्रेरित किया । टी. भुवनेश्वरी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन किया ।

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की रिपोर्ट

हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा पूर्व-प्राथमिक के छात्रों के लिए 'हिंदी ज्ञान' पुस्तक व डीवीडी का लोकार्पण

मॉरीशस में कोई एक हज़ार पूर्व-प्राथमिक विद्यालय हैं जहाँ औपचारिक तौर पर हिंदी शिक्षण का प्रावधान नहीं है ।जबकि विशेषज्ञों का मानना है कि 3 से 5 वर्ष की उम्र में, हमारे मस्तिष्क का विकास 50 प्रतिशत हो जाता है । अतएव, यह अवस्था अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं नाज़ुक है, क्योंकि इस उम्र में पड़नेवाला प्रभाव तथा प्राप्त भाषा ज्ञान जीवन पर्यन्त रहता है । इस बात को ध्यान में रखते हुए, यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि बच्चों को तरुण अवस्था में ही भाषा व संस्कृति की घुट्टी पिलाई जाए जिसके लिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षण क्षेत्र अत्यंत ही उपयुक्त अवसर प्रदान करता है । भाषा-संस्कृति के प्रचार-कार्य के लिए इस सब से उपयुक्त भूमि को मॉरीशस स्थित हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने अपना कार्यक्षेत्र बनाने का संकल्प लिया है ।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हिंदी संगठन ने पुर्व-प्राथमिक शिक्षकों के लिए 'हिंदी ज्ञान' सहायक पुस्तक तैयार की है । इस पुस्तक में प्रार्थना, गीत, कविता तथा फल, सब्ज़ी, दिन इत्यादी के नाम चित्र के साथ दिए गए हैं। अत्यंत आकर्षक रंगों से सजी पुस्तक में अत्यंत सुलभ बाल गीत भी संलग्न हैं तथा चित्रों की सहायता से वर्णमाल ज्ञान भी है । सूचना-प्रौद्योगिकी के इस युग में संगठन पूर्व प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए आधुनिकतम तकनीक का भी लाभ उठाना चाहता है । इस विचार से अधिगमन में अधिक सुविधा के लिए, इस पुस्तक की एक डी.वी.डी तैयार की गई है जो बच्चे पर्दे पर बहुत चाव के साथ देख सकते हैं और अपनी भाषा से अवगत हो सकते हैं।

'हिंदी ज्ञान' पुस्तक का भव्य लोकार्पण 24 अक्टूबर, 2012 को मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी द्वारा किया गया तथा डीवीडी का लोकार्पण शनिवार 16 मार्च को राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह के अंतर्गत गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम कैलाश प्रयाग द्वारा किया गया ।

संगठन के अध्यक्ष श्री राजनारायण गति जी ने कहा कि यह सामग्री संगठन द्वारा निशुल्क सभी पूर्व प्राथमिक विद्यालयों को भेंट की जाएगी। प्राथमिक कक्षाओं के लिए भी यह कार्य बहुत उपयोगी साबित होगा तथा पुस्तक के प्रयोग हेतु, शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ चलाई जाएँगी तथा उन्हें कक्षा चलाने के लिए सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।

हिंदी संगठन के अधिकारी इस बात से भली भाँति अवगत हैं कि मॉरीशस के समान विदेशों में भी माता-पिता व शिक्षकों को बाल्यावस्था में बच्चों को हिंदी ज्ञान देने में कई समस्याएँ होती हैं । इसके समाधान हेतु संगठन इस पुस्तक की सहायक डीवीडी को शीघ्र अपने वेबसाईट पर भी उपलब्ध कराएगा ।

हिंदी संगठन को पूरा विश्वास है कि यह पुस्तक बच्चों के चरित्र-निर्माण एवं मूल्यों के ज्ञान की आधारशीला होगी।

हिंदी स्पीकिंग यूनियन की रिपोर्ट

यू.के. हिंदी सम्मान

विश्व हिंदी दिवस, 2013 के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग, लंदन द्वारा 19 मार्च, 2013 को हिंदी के चार ऐसे लेखकों, पत्रकारों, शिक्षकों और संस्थाओं को एक समारोह में सम्मानित किया गया जिन्होंने इंग्लैण्ड में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

शिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जॉन गिलक्रिस्ट यू.के. हिंदी शिक्षण सम्मान श्री महेंद्र किशोर वर्मा (यॉर्क विश्वविद्यालय) को प्रदान किया गया । डॉ. कृष्ण कुमार को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए डॉ. हरिवंश राय बच्चन यू.के. हिंदी साहित्य सम्मान से विभूषित किया गया । साहित्य सृजन में सक्रीय तथा इलैक्ट्रॉनिक मिडिया के मंच से हिंदी की वाणी को बुलन्द करने वाली डॉ. श्रीमती कविता वाचक्नवी को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान दिया गया तथा नॉटिङ्घम काव्य रंग संस्था को यू.के में हिंदी प्रचार के लिए फ्रेडेरिक पिन्कॉट्ट यू.के. हिंदी प्रचार सम्मान प्रदान किया गया । इस अवसर पर भारत के उच्चायुक्त महामहिम डॉ. जे. भगवती ने इन हिंदी सेवियों को नकद राशि, शील्ड, शॉल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

इसके अतिरिक्त डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी प्रकाशन योजना के अंतर्गत श्रीमती उषा वर्मा को उनकी पुस्तक 'सिम कार्ड तथा अन्य कहानियाँ' के लिए और डॉ. कृष्ण कन्हैया को उनके काव्य-संग्रह 'किताब ज़िंदगी की' के प्रकाशन हेतु नकद राशि और मान पत्र प्रदान दिया गया । हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार तथा कला एवं साहित्य क्षेत्र के भारतीय मूल के लोग समारोह में उपस्थित थे ।

स्रोत : *भारतीय उच्चायोग, लंदन की प्रेस विज्ञप्ति*

6 ठा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन – संयुक्त अरब अमिरात

श्रीमती पूर्णिमा वर्मन

रायपुर, बैंकाक, मॉरीशस, पटाया और ताशकंद (उज़्बेकिस्तान) में पाँच-पाँच अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों के सफ़लतापूर्वक आयोजन के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी और हिंदी-संस्कृति को प्रतिष्ठित करने के लिए संस्था व साहित्यिक वेब पत्रिका सृजनगाथा डॉट कॉम ने 12 फ़रवरी से 19 फ़रवरी, 2013 तक अभिव्यक्ति डॉट कॉम, (यूएई) के सहयोग से '6ठा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन' संयुक्त अरब अमिरात (दुबई, शारजाह, आबूधाबी, अज़मान आदि) में आयोजित किया । पिछले पाँच संस्करणों के समान, इस बार उन से अधिक मात्रा में, देश-विदेश से हिंदी के आधिकारिक विद्वान, अध्यापक, लेखक, भाषाविद्, शोधार्थी, संपादक, पत्रकार, टेक्नोक्रेट, बुद्धिजीवी एवं हिंदी सेवी संस्थाओं के सदस्य, हिंदी प्रचारक, हिंदी ब्लॉगर आदि ने इस भव्य आयोज में भाग लिया ।

उद्‌घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. हरीश नवल थे । स्वागत भाषण सृजन-सम्मान के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एच.एस.ठाकुर ने दिया । 6ठे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सम्मिलित सभी विद्वान वक्ताओं का यही अभिमत था कि हिंदी के सामर्थ्य को लेकर किसी फ़िक्र की आवश्यकता नहीं है । हिंदी ने हर भाषा के शब्दों को अंगीकार कर उसे नई ताकत दी है । सच्चे मायने में हिंदी की किसी भाषा के साथ कोई प्रतिस्पर्धा भी नहीं है ।

डॉ. हरीश नवल

दुबई में शोध संगोष्ठी

आयोजित सम्मेलन में विमर्श का केंद्रीय विषय रहा – हिंदी का सामर्थ्य । इस विषय पर भाषा, शिल्प, विभिन्न विधाओं, कला, साहित्य, पत्रकारिता, रोज़गार, प्रशासन आदि पर डॉ. शरद पगारे, डॉ. हरीश अरोड़ा, मेधा शर्मा, डॉ. कामराह संधु, डॉ. मंजूला दास, डॉ. विनय भरत, डॉ. रेणु यादव, डॉ. चंद्रकांत मिसाल, आशीष कांधवे, रश्मि भार्गव, राधेश्याम भारतीय आदि ने अपना शोध आलेख पढ़ा । डॉ कलानाथ मिश्र ने सत्र का संचालन किया ।

आबूधाबी में अभिव्यक्ति पत्रिका द्वारा आयोजित रचना पाठ

अंतर्राष्ट्रीय रचना पाठ वाले सत्र में कथाकार लोकबाबू, हरीश नवल, राकेश अचल, मेरज रतन जांगिड, सुरेंद्र तिवारी, नीरजा द्विवेदी, प्रेमचंद सहजवाला, डॉ. सुधा शर्मा आदि ने अपनी कहानी, व्यंग्य, लघुकथा आदि का पाठ किया । कविता पाठ सत्र में संयुक्त राज्य अमीरत से प्रवासी कवयित्री पूर्णिमा वर्मन, दिगंबर नासवा तथा कनक शर्मा ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया । कार्यक्रम का संचालन शायर मुमताज ने किया । इस विशेष सत्र का आयोजन आबूधाबी में अभिव्यक्ति पत्रिका की संपादक पूर्णिमा वर्मन द्वारा किया गया, जिसमें अशोक शर्मा और कुलभूषण व्यास का महत्वपूर्ण योगदान रहा । कविता पाठ के तारतम्य में पूर्णिमा वर्मन, कुमार रवीन्द्र और शंभु कुमार झा के गीतों के फ़िल्म तथा शरद जोशी के व्यंग्य 'शंख बिन कुतुबनुमा' के नाट्य रूपांतर की प्रस्तुति भी मीरा ठाकुर और नागेश भोजने ने की । सम्मेलन का खास आकर्षण रहा पूर्णिमा वर्मन द्वारा कंप्यूटर से फ़ोटो कोलाज शैली में प्रस्तुत नवगीत पोस्टर प्रदर्शनी । इसके साथ ही रोहित रूसिया, विजयेंद्र विज, अमिल कल्ला, डॉ. जे.एस.बी. नायडू के कैनवासों की प्रदर्शनी लगाई गयी थी ।

27 से अधिक कृतियों का विमोचन

सम्मेलन में कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, निबंध, बाल साहित्य आदि पर आधारित 27 से भी अधिक कृतियों तथा दो लघु पत्रिकाओं के नये अंक का लोकार्पण भी किया गया ।

कृष्ण बिहारी और पूर्णिमा वर्मन का सम्मान

सम्मेलन के अलंकरण सत्र के मुख्य अतिथि दुबई में भारतीय कौंसलावास के पी.के. अशोक बाबू ने कथाकार लोक बाबू को मिनिमाता सम्मान, प्रवासी लेखक कृष्ण बिहारी (कथा लेखन), पूर्णिमा वर्मन (इंटरनेट पर हिंदी का विकास), चित्रा जांगिड़ (नृत्य), लालित्य ललित (कविता), कुमेश जैन (फिलेटेली कार्य) आदि को सृजनगाथा सम्मान 2012 से अलंकृत किया गया । इस अवसर पर कथक नृत्य तथा राजस्थानी लोकनृत्य भी प्रस्तुत किये गये ।

सृजनगाथा के संपादक और अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के मुख्य समन्वयक डॉ. जयप्रकाश मानस ने घोषणा की कि अगली यानी 7वां अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन वियतनाम और कंबोडिया में किया जायेगा ।

संप्रेषक : श्रीमती संपत देवी मुरारका

पुस्तक लोकार्पण एवं साहित्यकार सम्मान समारोह आयोजित

गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में मासिक 'संस्कार-सारथी' एवं मासिक 'साहित्य क्रान्ति' पत्रिकाओं के संयुक्त तत्वावधान में पुस्तक लोकार्पण एवं साहित्यकार सम्मान समारोह का आयोजन पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. कमल किशोर गोयनका की अध्यक्षता एवं डॉ. भारतेन्दु श्रीवास्तव, आचार्य धीरेन्द्र त्रिपाठी, डॉ.इन्द्र सेंगर, डॉ. जगत सिंह ठाकुर के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया । इस समारोह में देश-विदेश से सैकड़ों हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई । कनाडा से भारतेन्दु श्रीवास्तव एवं आचार्य धीरेन्द्र त्रिपाठी विशेष रूप से उपस्थित हुए ।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ । डॉ. कमल किशोर गोयनका ने कहा कि वर्तमान में लेखकों का पठन-पाठन से विमुख होना सृजन के लिए घातक है । जब तक लेखक स्वयं अध्ययन, मनन नहीं करेगा, तब तक वह सार्थक लेखन नहीं कर सकेगा । डॉ. श्याम सिंह शशि ने बताया कि साहित्य में शॉर्टकट नहीं चलता, साहित्य एक साधना है, जो जितनी साहित्य साधना करेगा, वह उतना ही उत्कृष्ट साहित्य लिख सकेगा। आचार्य धीरेन्द्र ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत की पहचान उसकी संस्कृति, उसके संस्कारों, उसके साहित्य से है, इन्हें अक्षुण्ण बनाये रखने के हर संभव प्रयास होना चाहिए । इस अवसर पर भारतेन्दु श्रीवास्तव रचित 'महाभारत गान भाग – 7' (राजेश्वरी प्रकाशन), आचार्य धीरेन्द्र त्रिपाठी व भारतेन्दु श्रीवास्तव रचित 'श्रीसत्यनारायण कथा' (गीता प्रकाशन), देवी नागरानी कृत 'और मैं बड़ी हो गयी' (संयोग प्रकाशन), मुकेश परमार की रचना 'मानव व अन्य प्राणी : एक अवलोकन' (रजनी प्रकाशन) तथा सुनीता शर्मा की कृति 'एहसास के पल' (राधा प्रकाशन) का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया।

लगभग 30 हिंदी साहित्यकारों को इस अवसर पर अक्षर शिल्प सम्मान 2013 से सम्मानित किया गया । साथ ही साथ लघु-पत्रिकाओं के 10 संपादकों को गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान 2013 से सम्मानित किया गया । 30 समाजसेवी/सृजनधर्मी संस्कार सम्मान 2013 से सम्मानित हुए ।

समारोह के द्वितीय सत्र में अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को जहाँ एक ओर गुदगुदाया, हँसाया वहीं नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, देश-प्रेम जैसे मुद्दों पर सोचने के लिए विवश किया । इसका संचालन अनिरुद्ध सिंह सेंगर एवं डॉ. प्रीति प्रवीण खरे ने किया । अंत में मुकेश परमार ने आभार-ज्ञापन किया ।

प्रेषक : अनिरुद्ध सिंह सेंगर

'बाज़ार में गुड़िया' का लोकार्पण

दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन ने डॉ. सीतेश आलोक के सद्य-प्रकाशित कविता संग्रह 'बाज़ार में गुड़िया' के लोकार्पण एवं उसपर चर्चा-गोष्ठी का आयोजन, दिनांक 19 जनवरी 2013 को, हिंदी भवन सभागार में किया, जिसमें अध्यक्ष थे प्रो. धर्मपाल मैनी और मुख्य अतिथि थीं कालिन्दी कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय की पूर्व प्राचार्य डॉ. मालती । सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. महेशचंद्र शर्मा ने अतिथियों का विधिवत् स्वागत किया और प्रसन्नता व्यक्त की सम्मेलन एक महत्वपूर्ण कृति पर चर्चा आयोजित कर रहा है ।

पुस्तक पर चर्चा करने के लिए पधारे थे हिंदी अकादमी, दिल्ली के पूर्व सचिव डॉ. राम शरण गौड़, कवि-संपादक डॉ. बनवारी लाल गर्ग तथा सुप्रसिद्ध कवि श्री नरेश शांडिल्य । सभी वक्ताओं ने संग्रह के शीर्षक 'बाज़ार में गुड़िया' को ही नहीं संग्रहीत सभी कविताओं को भी बड़ा ही सार्थक, सांकेतिक और सामयिक बताया । डॉ. मालती ने सभी कविताओं को प्रभावशाली बताते हुए उनपर अपनी प्रतिक्रिया दी और प्रो. मैनी ने कवि की बभुमुखी प्रतिभा का उल्लेख करते हुए कहा कि संग्रह की कविताएँ बड़ी सहजता से बढ़ते हुए एक उत्कर्ष बिन्दु पर पहुँचकर अपना भरपूर प्रभाव छोड़ती हैं । श्री अनिल जोशी ने कार्यक्रम का सफ़लतापूर्वक संचालन किया और बीच-बीच में संग्रह से मार्मिक एवं प्रासंगिक अंश सुनाकर श्रोताओं पर काव्य रस की वर्षा की ।

इस अवसर पर सभागार में श्री दया प्रकाश सिन्हा, डॉ. प्रेम जनमेजय, डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना, श्री अतुल प्रभाकर, डॉ. हरि सिंह पाल, श्री राजेश गोगना, डॉ. रेखा व्यास, श्री शशि कान्त, श्री सपन भट्टाचार्य आदि अनेक गण्यमान्य साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे ।

प्रवासी दुनिया से साभार

'मेरा मुझ में कुछ नहीं' का लोकार्पण एवं विचार-गोष्ठी

1 मार्च, 2013 को नई दिल्ली के गांधी शांति प्रतिष्ठान के सभागार में सुप्रसिद्ध साहित्यकार रमेश उपाध्याय की आत्मकथात्मक एवं साहित्यिक विमर्शों की नई पुस्तक 'मेरा मुझ में कुछ नहीं' का लोकार्पण वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने किया ।

संज्ञा उपाध्याय ने स्वागत भाषण दिया और विश्वनाथ त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा "मैं रमेश उपाध्याय से प्रेरणा पाता रहा हूँ और आज भी पाता हूँ । उनका जीवन-संघर्ष और साहित्य सृजन आज के युवा लेखकों के लिए ही नहीं, हम जैसे उम्र में बड़े लेखकों के लिए भी प्रेरणादायक है ।" इस पुस्तक में उनके जीवन-संघर्ष और साहित्य सृजन का परिचय हमें ऐसी भाषा में मिलता है, जो जीवन के सत्य और समाज के यथार्थ को व्यक्त करने में सर्वाधिक सक्षम भाषा है । इस पुस्तक में जगह-जगह पर ऐसी सूक्तियाँ मिलती हैं, जो भूमंडलीय और भारतीय साहित्य की श्रेष्ठ परंपरा को सार्थक रूप में आगे बढ़ाती हैं ।

इसी प्रकार आलोचक मैनेजर पांडेय, कवि लीलाधर मंडलोई, अल्पना मिश्र, राकेश कुमार ने अपने विचार पेश किए । कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन युवा आलोचक पल्लव ने किया ।

अंकित की रिपोर्ट

संपादकीय

विश्व की हिंदी और हिंदी का विश्व: विरुद्धों का सामंजस्य हिंदी का सौन्दर्य है !

विश्व हिंदी समाचार का प्रस्तुत अंक आपके समक्ष वर्ष 2013 की प्रथम तिमाही में विश्व भर में हिंदी से सम्बन्धित गतिविधियों का ब्योरा लेकर आया है। यह तिमाही विशेष रूप से 10 जनवरी को आयोजित विश्व हिंदी दिवस के कारण महत्वपूर्ण है। प्रसन्नता की बात है कि विश्व के अनेक देशों में विश्व हिंदी दिवस के आयोजन की परंपरा सुदृढ़ होती जा रही है जिसका प्रमाण एक बार पुन: अनेक दिशाओं से आए विवरण दे रहे हैं।

जहाँ तक सचिवालय की गतिविधियों का प्रश्न है, सूचनापत्र में प्रकाशित खबरों से आपको संकेत मिला होगा कि 2013 का आरंभ, गतिविधियों की दृष्टि से दो विशेष स्तम्भों पर आधारित रहा है। मॉरीशसीय हिंदी साहित्य प्रकाशन की शताब्दी (जिसका मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता के साथ अवियोज्य सम्बन्ध है) और दूसरा हिंदी सिनेमा के सौ वर्ष। जहाँ विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सचिवालय ने विश्व में हिंदी के प्रचार में चित्रपट की भूमिका को उभारा वहीं भारतेत्तर जनमानस के जीवन की सच्चाइयों की अभिव्यक्ति हिंदी में करने वाले भारतेत्तर हिंदी साहित्य के अग्रदूत; मॉरीशसीय हिंदी साहित्य की शताब्दी, 2 मार्च को मनाई गई। इस बीच मॉरीशस कि एक और महत्वपूर्ण संस्था इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद की ओर से मॉरीशस के प्रथम हिंदी समाचारपत्र हिंदुस्तानी के संपादक पं. आत्माराम विश्वनाथ के मॉरीशस आगमन की शताब्दी के उपलक्ष्य में गतिविधियों के भावी आयोजन की भी सूचना मिली।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी सिनेमा की शताब्दी पर आधारित कार्यक्रम हिंदी के कार्यक्षेत्र में एक नया अनुभव-कोश खोलने जैसा रहा।

यह नई बात नहीं कि सिनेमा और साहित्य दो ऐसे शब्द हैं जिनका एक साथ प्रयोग हिंदी के क्षेत्र में भौहें टेढ़ी करने का कारण बनता है। आज सिनेमा के अधिकांश भाग की स्थिति तथा भाषा प्रयोग की दृष्टि से अराजकता को देखते हुए यह स्वाभाविक और उचित भी है। पत्रकारिता का भी अन्य दोनों के साथ अनेक आधारों पर मूलभूत अंतर एक स्थापित तथ्य है। परंतु यह स्थिति केवल सिनेमा, साहित्य और पत्रकारिता के बीच नहीं है। आज विश्व स्तर पर हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के इन तीन प्रमुख स्तम्भों के अतिरिक्त चौथा स्तंभ निस्संदेह शिक्षा का है जो प्रथम तीन स्तंभों का पोषक होने के नाते इन सभी से अधिक महत्वपूर्ण भी हो जाता है। ...पाँचवा स्तंभ है धर्म। ध्यान से देखें तो इन पाँचों में कार्यरत हिंदी कर्मियों को एक दूसरे के हिंदी प्रयोग के साथ कुछ न कुछ शिकायत अवश्य है । भाषा-प्रयोग सम्बन्धी विचारों को लेकर हिंदी के ये पाँच और अन्य सभी क्षेत्र एक दूसरे से अलग धूरियों पर विद्यमान, परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं।

ऐसे में सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ दिवस के अवसर पर प्रो. जगन्नाथन के संदेश में एक अत्यंत स्वाभाविक परंतु विशेष वाक्य स्मरण हो आता है : *'यदि हिंदी को विश्व की भाषा बनाना है तो यह अनिवार्य है कि हिंदी भाषा विश्व की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करे।'* अन्य शब्दों में, यदि हम विश्व में हिंदी का विस्तार देखना चाहें तो स्वाभाविक रूप से हिंदी का विश्व भी विस्तृत करना ही चाहिए ।

कथन विचारोत्तेजक है। उपरोक्त गतिविधियों के आयोजन, उनमें भाग लेने वाले हिंदी के अलग-अलग क्षेत्रों के विद्वानों के अनुभव और विशेष रूप से उनमें उपस्थित हिंदी प्रेमियों की प्रतिक्रिया के समक्ष रखकर देखता हूँ तब और अधिक विचारोत्तेजक लगता है। कारण ... ?

जिन पाँच महत्वपूर्ण क्षेत्रों (स्तंभों) में हिंदी के अधिकतम प्रयोग की चर्चा ऊपर की गई वे वर्तमान में अधिकांश मात्रा में पारंपरिक हिंदी भाषी अथवा हिंदी मूल के जनमानस के जीवन से जुड़े हैं। यह जनमानस, उसका जीवन और उसकी संस्कृति विशाल होते हुए भी 'विश्व की सामासिक संस्कृति' के समक्ष छोटा ही है – संपूर्ण का अंश ही है। पर छोटा होने के बावजूद भी इस जनमानस की संस्कृति की अभिव्यक्ति कर रहे हिंदी के उपरोक्त क्षेत्रों के बीच परस्पर विरोध प्रकट होता है। हिंदी के प्रयोग को लेकर साहित्य सिनेमा से नाखुश है, सिनेमा पत्रकारिता से, पत्रकारिता किसी और से ...

इस संदर्भ में यह विचार स्वाभाविक हो जाता है कि हिंदी का विश्व जैसे-जैसे बड़ा होता जाएगा, इस बड़े विश्व के भिन्न-भिन्न आयामों/क्षेत्रों में कार्यरत हिंदी के शुभचिंतकों के लिए एक दूसरे को और एक दूसरे के कार्यक्षेत्र को समझना और अधिक कठिन होता जाएगा - जा रहा है। विरोध और अधिक बढ़ता जाएगा - जा रहा है। हिंदी के साथ नित नए प्रयोग क्षेत्र जुड़ेंगे जिनकी भाषिक मांगें – शैली, व्याकरण, शब्द-भंडार, साथ ही तेवर, संस्कृति, अनुशासन आदि की दृष्टि से - हिंदी के वर्तमान क्षेत्रों की मांगों से भिन्न होंगी। दूसरी ओर विश्व की सामासिक संस्कृति अपने आप में इतनी विशाल, विराट सिद्ध होगी कि उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता हिंदी के किसी भी एक प्रयोग-क्षेत्र, विधा, लेखक, शैली आदि में नहीं हो सकती। धरती के धरातल पर उपस्थित हर बात को कह पाने के लिए हिंदी को अपनी संपूर्ण क्षमताओं का सामंजस्यता के साथ प्रयोग करना होगा।

भविष्य में अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं के बीच सामंजस्य हिंदी के लिए सबसे बड़ी चुनौती सिद्ध होगी।

इस चुनौति को पार करने का मार्ग उपरोक्त विरोधों के मध्य स्थित सत्यों से होकर गुज़रता है। एक सत्य यह कि इन कठिनाइयों और विरोधों में जहाँ इन भिन्न क्षेत्रों के बीच विभाजन की घातक क्षमता है वहीं इन कठिनाइयों और विरोधों के पार, हिंदी के सभी क्षेत्रों के सम्यक चित्र में ही विश्व की हिंदी का 'विस्तृत विश्व' भी उभरकर आता है - आ रहा है।

दूसरा यह कि हिंदी के हर एक प्रयोग-क्षेत्र, विधा, शैली आदि में कार्यरत हर एक विशेष व साधारण व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्र में अपने-अपने कार्य में हिंदी के सौंदर्य का आनंद भी ले रहा है और उसमें वृद्धि भी कर रहा है।

इसलिए आज आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के प्रसिद्ध 'विरुद्धों का सामंजस्य' सिद्धांत के आधार पर यह कहने का मन है कि हिंदी का विश्व में विस्तार होगा तो हिंदी के अंतर्गत विद्यमान विश्व का भी विस्तार होगा। इस विस्तार से स्वाभाविक रूप से उसमें परस्पर विरोधी तत्व शामिल होंगे - बढ़ेंगे। परंतु अंतत: वैश्विक हिंदी के इस विस्तृत विश्व में विरुद्धों के सामंजस्य में ही हिंदी का सौन्दर्य दिखने लगेगा।

गं. सुखलाल

31 मार्च 2013

पुनश्च :

इस समय जब यह अंक प्रेस में भेजा जा रहा है उस समय सचिवालय की भूमि मॉरीशस पर प्रकृति का प्रकोप बरसा है। विश्व के महत्वपूर्ण समाचार प्रसारकों ने भी इसकी चर्चा की है कि 30 मार्च को मॉरीशस में आई बाढ़ से मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुईस और उसके आसपास के प्रांत अत्यंत प्रभावित हुए हैं। अंतिम आँकड़ों के अनुसार इस प्रकोप से ग्यारह नागरिकों की मृत्यु हुई है। विश्व हिंदी परिवार के आप सभी सदस्यों की ओर विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के उन नागरिकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

धन्यवाद

पिछले फ़रवरी महीने में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा सचिवालय में अपनी प्रतिनियुक्ति समाप्त कर स्वदेश लौट गईं ।

सचिवालय में अगस्त 2011 से आरम्भ उनके कार्यकाल के अंतर्गत सभी उपलब्धियों के लिए उनका हार्दिक धन्यवाद तथा भावी कार्यक्षेत्र में सफ़लता की शुभकामनाएँ ।